'युवाओं को आत्मनिर्भर बनाएगी मधुबनी चित्रकला'

जासं, कानपुर : गांव की झोपड़ी के आंगन से निकली मधुबनी चित्रकला आज बड़े-बड़े कैनवास और प्रिंटेड कपड़ों पर अपनी छाप छोड़ रही है। वर्ष 1975 में जब मैंने मधुबनी पेंटिंग बनानी शुरू की थी उस समय महज दो से छह रुपये में पेंटिंग बिकती थी लेकिन आज कैनवास पर बनने वाली पेंटिंग लाखों रुपये में बिकती है। ये बातें 2024 के पद्मश्री अवार्ड के लिए नामांकित मधुबनी कलाकार शांति देवी व शिवन पासवान ने कहीं। वे सर पदमपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर कमला नगर में 28 दिसंबर तक चलने वाली मधुबनी चित्रकला कार्यशाला में बतौर प्रशिक्षक शामिल होने आए हैं। प्रधानाचार्य भावना मौजूद रहीं।